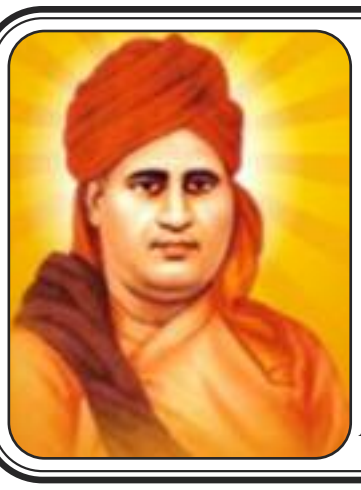

# आर्योदया

# ARYODAYE

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

Aryodaye No. 295 ARYA SABHA MAURITIUS *13th Sept. to 26th Sept. 2014*


## Qu'il y ait l'harmonie dans notre vie!

**ओ३म् मधुमन्मे परायणं मधुमत्पुनरायनम् ।**
**ता नो देवा देवतया युवं मधुमतस्कृतम् ।।**

ऋग् वेद १०/२४/६

**Om ! Madhumanmé parāyanam madhumat punarāyanam.**
**Tā no dévā dévatya yuvam madhumatskritam.**

*Rig. Véda10.24.6*

**Hé ashvinava/Hé āchāryopdéshak** – O les grands sages/les érudits, et les conférenciers ou les prédicateurs!, **Mé** – mon, ma, mes, **Parāyanam** – allées/départs, **Madhumat / Madhumaya** – soit agréable/plaisant/ sous d'heureux auspices, **Déva** – vous êtes des saints, **Tā yuvam** – vous deux, **Dévtaya** – par votre bénédiction, **Naha/No** – nous, **Kritam** – faites que, **Madhumatam** – soit sous les meilleurs auspices.

*O les grands sages et les prédicateurs vous êtes tous des saints ! Que par vos bénédictions nous ayons une vie remplie de bonheur !*

*On peut faire de notre entourage un paradis ou un enfer. Cela dépend entièrement de notre comportement et agissement.*

*L'harmonie dans la famille n'est créée que par l'amour, l'affection, la compassion, le respect, le partage, la tolérance, la compréhension mutuelle et la magnanimité.*

*S'il y a une approche amicale de notre part envers tout le monde, l'environnement devient totalement agréable et si on agit autrement l'atmosphère se transforme en cauchemar.*

*D'après les enseignements des Védas, il nous est fortement conseillé de rendre notre vie paisible et heureuse.*

*Qu'il y ait de l'harmonie de toutes parts, que ce soit à la maison ou dans notre entourage.*

*En quittant la maison ou rentrant, nous, en tant que parents et chefs de familles, devons toujours nous montrer avenants envers tout le monde. Que nos parcours dans notre entourage soient sous les meilleurs auspices !*

*Conséquemment l'atmosphère de notre environnement (c'est-à-dire la maison et notre entourage) va se transformer en un havre de bonheur et de paix où il fera bon vivre.*

***N. Ghoorah***

## पितृ यज्ञ

*डा० उदय नारायण गंगू, ओ.एस.के, आर्य रत्न*

गृहस्थ जीवन बड़ा ही उत्तरदायित्वपूर्ण है। वैदिक विधान है कि प्रत्येक गृहस्थ प्रतिदिन पाँच महायज्ञों का अनुष्ठान करे। पंचमहायज्ञों में एक है – 'पितृ यज्ञ', जिसका अर्थ बताते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती लिखते हैं – 'जीते हुए माता-पिता आदि की यथावत् सेवा करना 'पितृयज्ञ' कहाता है।'

हिन्दू समाज 'पितर पक्ष' में मृतकों का श्राद्ध करता है। हमारे धर्म ग्रन्थों के अनुसार पुनर्जन्म का विधान है। श्रीमद्भगवद्गीता ने स्पष्ट कहा कि जैसे पुराने कपड़े को छोड़कर नये कपड़े को धारण करते हैं, वैसे ही आत्मा नये शरीर को धारण करती है।

अतः 'पितर पक्ष' के अवसर पर मृत जनों को अन्न-जल देना दिमाग़ी दिवालियापन है। 'पितृयज्ञ' के दो भेद हैं – एक 'तर्पण' और दूसरा 'श्राद्ध'।' महर्षि दयानन्द अपनी अमर कृति - 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' में लिखते हैं - 'जिस कर्म को करके विद्वान् रूप देव, ऋषि और पितरों को सुखयुक्त करते हैं, सो 'तर्पण' कहाता है तथा जो उन लोगों की श्रद्धापूर्वक सेवा करना है, उसी को 'श्राद्ध' जानना चाहिए। यह तर्पण आदि कर्म विद्यमान अर्थात् जीते हुए, जो प्रत्यक्ष हैं, उन्हीं में घटता है, मरे हुओं में नहीं, क्योंकि मृतकों का प्रत्यक्ष होना असम्भव है, इसलिए उनकी सेवा नहीं हो सकती ।'

यजुर्वेद के अनेक ऐसे मन्त्र हैं, जिनमें जीवित पितरों के ही तर्पण और श्राद्ध करने का आदेश दिया गया है। इस सन्दर्भ में कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं –

**अत्र पितरो मादयध्वं यथा भागमावृषायध्वम् ।**
**अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत ।।**

उपर्युक्त मन्त्र में वेद उपदेश देता है कि मनुष्य लोग माता-पिता आदि धार्मिक सज्जन विद्वानों को समीप आये हुए देखकर उनकी सेवा करें। प्रार्थनापूर्वक कहें कि हे पितरो ! आप लोगों का आना हमारे उत्तम भाग्य के कारण है। आइये, हमारे पास जो खाद्य पदार्थ हैं, उनको स्वीकार करके हमें कृतार्थ करें। आज्ञा दीजिये कि हम किन-किन वस्तुओं से आपका सत्कार करें। साथ ही अपने उपदेशों से हमें बुद्धि प्रदान कीजिए, ताकि हम आपसे विद्या पाकर नित्य उन्नति करें।

यजुर्वेद के द्वितीय अध्याय का बत्तीसवाँ मन्त्र पितरों को बार-बार नमन करने का आदेश देता है, यथा –

**नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वोगृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो देष्मैतद्वः पितरो वासः ।।**

उपर्युक्त मन्त्र ने बताया कि पितर गण हमें विद्या-विज्ञान का आनन्द देकर हमारे दुख को दूर करते हैं, हमें सुखी बनाते हैं, इसलिए हम उनको नमस्कार करें। हे सेवा करने योग्य पितृ लोगो ! हमारे दिये भोजन-वस्त्रादि को ग्रहण कीजिए। हमारा आपको नमस्कार है । जीवित माता-पिता और ज्ञानी जनों को ही उपर्युक्त मन्त्रों ने 'पितर' बताया है ।

धन्य हैं वे लोग, जो अपने पितरों को श्रद्धापूर्वक सेवा करके तृप्त करते हैं । ऐसे ही जन बड़ों के आशीर्वाद को पाकर जीवन में फलते-फूलते हैं । हमारे ऊपर बड़े-बुज़ुर्गों का आशीर्वाद यही है कि वे अपना ज्ञान और जीवन का अनुभव देकर हमारा मार्ग-दर्शन करते हैं, सही रास्ते पर चलने की आँखें देते हैं। उनके उपदेशों के कारण ही हम सुखी बनते हैं।

## सम्पादकीय

## विश्व का विलक्षण प्राणी

*ईश्वर सृष्टि कर्त्ता है, उसकी सृष्टि में दो प्रकार की कृतियाँ विद्यमान हैं । एक प्रकार की कृति जड़ है और दूसरे प्रकार की कृति चेतन है। जड़ की कृतियों में एक से बढ़कर कृतियाँ दिखाई देती हैं, जैसे कि पत्थर, मिट्टी आदि चेतनरहित कृतियाँ। दूसरे प्रकार की कृति को चेतन कहते हैं। जिसमें जीव होता है, ज्ञान होता है और किसी वस्तु का बोध होता है। इन दो कृतियों में चेतन की कृतियाँ विलक्षण होती हैं। मनुष्य, पशु, पक्षी जन्तु आदि चेतन हैं । इन सभी प्राणियों में मनुष्य सबसे बुद्धिमान होता है, उसमें सोचने, विचारने , निर्णय लेने, तर्क-वितर्क करने की क्षमता होती है।*

*मनुष्य एक सर्वश्रेष्ठ प्राणी माना जाता है, उसमें विद्या ग्रहण करने की शक्ति होती है। वह बुद्धिजीवी बनकर सभी जीवों की भलाई करता है। अपने विद्याबल द्वारा दोष, निर्दोष, उत्कृष्ट-निकृष्ट तथा सुकर्म और कुकर्म आदि का ज्ञान रखता है। आदमी अपनी सद्बुद्धि द्वारा सही कर्म करता है और कुबुद्धि से ग़लत काम कर बैठता है। वह अपनी बुद्धि का सही प्रयोग करके श्रेष्ठ कर्म करता है और कुबुद्धि का इस्तेमाल करके नीच बन जाता है। मानव-बुद्धि सार्थक तभी बन पाती है, जब उसका अच्छे कर्मों में प्रयोग किया जाए।*

*मानव एक बुद्धिमान प्राणी है। उसके पास जितनी बुद्धि होती है या जैसी बुद्धि होती है वह वैसे ही कर्म या उसी स्तर के कर्म करता है। मनुष्य अपने आप किसी वस्तु की जानकारी प्राप्त कर लेता है। उसे ठंडा, गरम, खट्टा-मीठा, सही-ग़लत आदि की जानकारी बड़ी आसानी से प्राप्त हो जाती है। इंसान को कभी भी कहने की आवश्यकता नहीं पड़ता है कि तुझे जानकारी प्राप्त करनी चाहिए या कर्म करना चाहिए। वह बिना कहे जानकारी प्राप्त कर लेता है और अपना कर्म करता है। संसार में अरबों की संख्या में मनुष्य तो हैं परन्तु सभी आदमी श्रेष्ठ, उत्तम और सज्जन नहीं होते हैं, सभी लोग सुकर्मी नहीं होते हैं, असंख्य दुर्जन और पापी भी हैं।*

*मानव जाति में बुद्धि, मन, वाणी, चित्त, हृदय अन्तःकरण तथा आत्मा होते हैं। उसका शरीर एक गाड़ी की तरह है, जिसमें बैठकर जीवात्मा मोक्ष प्राप्त करना चाहता है। उसकी पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और पाँच कर्मेन्द्रियाँ, शरीर रूपी गाड़ी के घोड़े होती हैं। उसका मन लगाम होता है, जिसके रोकने से इन्द्रियाँ रूपी घोड़े रुक सकते हैं। उसकी बुद्धि गाड़ीवान है, जिसके वश में मन रहता है। इसी लिए जिसकी बुद्धि बिगड़ जाती है, वह खराब काम करके दुख सहता है। बुद्धिमान पुरुष अपनी तीव्र बुद्धि का प्रयोग करके अपना और पराये का भला करता हुआ सर्वत्र प्रशंसा प्राप्त करता है। इस दुनिया में हर एक व्यक्ति अगर मानसिक पुण्य-कर्म करना प्रारम्भ कर दें, जो बहुत से पाप-कर्म मिट जाएँगे, क्योंकि मन से किया हुआ उपकार अपने, परिजनों, सखा, सम्बन्धियों, सामाजिक संस्थाओं और राष्ट्र के लिए हितकर होता है।*

*हम अपने ज्ञान के अनुसार कर्म करते हैं। सत्य-ज्ञान प्राप्त करने से हम सत्य-कर्म करते हैं और असत्य-ज्ञान हासिल करके कुकर्म कर बैठते हैं। विश्व में दो प्रकार के इंसान होते हैं। आध्यात्मिक व्यक्ति और लौकिक व्यक्ति। आध्यात्मिक व्यक्ति सात्त्विक मन से, एकाग्रचित्त होकर मानसिक कर्म करते हैं। मानसिक कर्म करने वाले मानव कड़ी तपस्या और स्वाध्याय करते हैं। प्राणी मात्र के लिए पुण्य कर्म करते रहते हैं, उनके लिए ब्रह्माण्ड में कोई शत्रु नहीं होता है, उनके मन में किसी प्राणी के प्रति कोई, द्वेष-ईर्ष्या वैरादि नहीं होते हैं। लौकिक व्यक्ति राग-द्वेष, मोह-माया से ऊपर उठ नहीं सकते हैं। वे सांसारिक भोग में फँसे रहते हैं। वे अपनी अज्ञानता वश यह भूल जाते हैं कि संसार मोह-माया का जाल है और शरीर नश्वर हैं। वे अपने जीवन काल में उपकार के बदले अपकार करते रहते हैं और भौतिक भोगी बनकर जीवन विसार देते हैं।*

*मनुष्य एक अनोखा प्राणी है, यह अद्भुत शरीर हमें शुभ कर्म करने के लिए मिला है। अपने शरीर, बुद्धि, वाणी और मन से अच्छे कर्म करके यह अनमोल जीवन व्यतीत करना मानव-धर्म है। इसीलिए सत्य-विद्या की प्राप्ति करके सत्य कर्म करना हम विलक्षण प्राणियों का परम कर्त्तव्य है अन्यथा हम में और अन्य जीवों में कोई अन्तर नहीं होगा।*

**बालचन्द तानाकूर**

# प्रतिशोध (Revenge)

*सत्यदेव प्रीतम,सी.एस.के,आर्य रत्न - उपप्रधान आर्य सभा मॉरीशस*

प्रतिशोध क्या है? किसी से बदला लेने की भावना प्रतिशोध है। इसका जन्म कैसे होता है ? इसमें दो पक्ष होने चाहिए। एक व्यक्ति दूसरे से बदला लेता है या एक व्यक्ति एक समूह से प्रतिशोध लेता है। कब यह विचार उत्पन्न होता है? यह विचार तब उत्पन्न होता है जब कोई आगे बढ़ता है, इससे अधिक प्रगति करता है किसी भी क्षेत्र में, पढ़ाई-लिखाई में, व्यापार में किसी पेशे में ।

सबसे जलन होती है तो उसे गिराने के लिए उसके रास्ते पर रोढ़ा अटकाता है। प्रतिस्पर्धा अगर होगी तब तो अच्छी बात है पर अगर द्वेष होगा तो दुश्मनी होगी । जो अच्छी बात नहीं है ।

राम और शाम दो समवयस्क दोस्त हैं। साथ स्कूल गए और नौकरी भी साथ साथ करना आरम्भ किया। दोनों ने सामाजिक सेवा भी एक ही साथ करना आरम्भ किया। पर देखते-देखते राम बहुत ही प्रसिद्धि पाने लगा और शाम एक साधारण सेवक के रूप में रह गया। अब शाम राम से जलने लगा और ईर्ष्या, द्वेष शुरू हुआ। शाम छोटी-छोटी बातों को बढ़ा-चढ़ाकर कहने लगा और जितने लोग राम को पसन्द करते थे उनके कान भरने लगा ताकि वे भी राम से द्वेष करे । शाम का यह व्यवहार निकृष्ट है। अब अपने बचाव में राम को विशेष कदम उठाना पड़ा। वह चारों तरफ़ कहने लगा कि शाम मुझे नीचा दिखाने के लिए यह सब कर रहा है । राम का यह व्यवहार श्रेष्ठ था। वह न जलन की भावना से ऐसा कर रहा था और न प्रतिशोध की भावना से । वह लोगों को आगाह कर रहा था कि शाम प्रतिशोध की भावना से रहा था ताकि लोग शाम पर विश्वास न करे। ऐसा करने से राम का सम्मान लोगों की निगाह में और बढ़ गया और लोग शाम की नीचता की भावना से परिचित हो गए।

इसी लिए कहा गया है दूसरों के लिए जो गड्ढा खोदेंगे तो उसमें खुद गिरेंगे। जीवन में आगे बढ़ने के लिए ईर्ष्या द्वेष नहीं बल्कि प्रेम करना चाहिए।

# छात्र जगत

छात्रों का जीवन तप, त्याग, नियन्त्रण और अनुशासन से परिपूर्ण होता है। जो विद्यार्थी आज्ञाकारी बनकर बड़े ध्यान पूर्वक अपने शिक्षक से शिक्षा ग्रहण करना अपना कर्त्तव्य समझता है, वह सदा सफलता की ओर बढ़ता जाता है। जो नासमझ और आलसी छात्र अपनी पढ़ाई-लिखाई में कम रुचि दिखाता है, वह परीक्षा में असफल होता जाता है। उसके सारे तपस्वी, त्यागी, मेहनती सहपाठी अपनी परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाते हैं और वह असफल होकर हाथ मलता रह जाता है।

शिक्षा और परीक्षा साथ-साथ चलने वाली दो प्रक्रियाएँ है। जहाँ शिक्षण व्यवस्था होती है, वहाँ परीक्षा की आवश्यकता होती है। शिक्षा ग्रहण करने के बाद सालान्त में सभी बच्चे परीक्षा की तैयारी में लग जाते हैं और पूरी तैयारी के साथ अपनी परीक्षा में भाग लेते हैं। शिक्षक जो ज्ञान अपने विद्यार्थियों को प्रदान करते हैं, उसका परीक्षण करना अति आवश्यक समझते हैं। उनकी योग्यताओं की जानकारी पाकर अपनी भावी योजना तैयार करते हैं।

बच्चे हो या वयस्क सभी लोग परीक्षा के प्रति सावधान रहते हैं। कई छात्र तो तनाव में आ जाते हैं। उन स्कूली बच्चों के दिमाग में अनेक प्रकार के सवाल उठते रहते हैं, जैसे कि परीक्षा के प्रश्नपत्र कैसे होंगे? जो तैयारी मैं ने की है, उसके अनुकूल प्रश्न आएँगे या नहीं ? इत्यादि। इसी प्रकार का भय चतुर छात्रों को भी भयभीत कर देता है और वे घबड़ा कर गलत उत्तर दे जाते हैं ।

प्यारे छात्रो। परीक्षा से कभी घबड़ाना नहीं चाहिए, बल्कि पूरी तैयारी के साथ निश्चिन्त होकर अपनी परीक्षा में भाग लेना चाहिए। कभी भी अपनी परीक्षा को बोझ न मानें, बड़े आराम के साथ ठंडे दिमाग से परीक्षा दें। मेहनत का फल जरूर मीठा होगा।

गत साल की तरह इस साल भी स्कूल की तीसरी अवधि आ गई है। छात्रगण अपनी परीक्षा की तैयारी में व्यस्त हैं। उधर सभी अभिभावक भी इसी चिन्ता में हैं कि उनके बच्चे परीक्षा में क्या फल लाएँगे ? तनाव दोनों तरफ से है । ऐसी स्थिति में कई माता-पिता अपने बच्चों पर इतना ज़ोर डालते हैं कि वे घबड़ा जाते हैं और बेचैन होकर कोई गलत कदम उठा लेते हैं। हम सभी माता-पिता जनों से आग्रह करते हैं कि आप अपने बच्चों की पढ़ाई-लिखाई तथा उनके व्यवहारों पर पूरा ध्यान दें। हमारे प्यारे, कोमल और सुकुमार बच्चे अपनी योग्यता अनुसार परीक्षाफल जरूर लाएँगे ।

हमारे सभी परीक्षार्थियों से आग्रह कि वे पूरी तैयारी के साथ परीक्षा भवन में प्रवेश करें। पूरे ध्यान के साथ प्रश्नों के उत्तर दें। सफलता आप के चरण चूमेगी।

इतना ध्यान रहे कि परीक्षा में अच्छा परिणाम पाने के लिए अपने शिक्षणकाल में कड़ी मेहनत करने की जरूरत होती है। घर और विद्यालय में एक अनुशासित और नियन्त्रित जीवन व्यतीत करने की आवश्यकता होती है, यदि आप कठोर परिश्रम करके बड़े तप-त्याग के साथ विद्या ग्रहण करेंगे और अपने अमूल्य समय का पूरा सदुपयोग करेंगे तो जीवन में प्रगति करते जाएँगे। स्कूल में सभी शिक्षक आपकी प्रशंसा करेंगे और परिवार के सभी सदस्य आपका गुणगान करेंगे। शिक्षकों तथा परिवारों के आशीर्वाद से आपका भविष्य मंगलकारी होगा ।

***बालचन्द तानाकूर***

## बुरा काम - अच्छा काम

*जिस काम के करने से पूर्व, करते समय, करने के पश्चात् मन में भय-शंका-लज्जा-अशान्ति की अनुभूति होती है। वह काम बुरा है। और जिस काम के करने से पूर्व, करते समय, करने के पश्चात् मन में आनन्द, उत्साह, निर्भीकता, सन्तोष, शान्ति की उत्पत्ति होती और जिससे समाज राष्ट्र की भी उन्नति होती है। वह काम अच्छा है, ऐसा मानना चाहिए। यह व्यवस्था ईश्वर की ओर से है ।*

## 'महर्षि दयानन्द का स्वप्न ही जिनका अपना स्वप्न था'

# वैदिक विद्वान शिरोमणि पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय

स्वस्थ व आधुनिक समाज के निर्माण के लिए अन्धविश्वास एवं कुरीतियों के उन्मूलन व समूलोच्छेद अपरिहार्य है। महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं आर्य समाज के निष्ठावान अनुयायी पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय ने अपने जीवन काल में मौखिक व्याख्यानों एवं लेखनी के द्वारा दीर्घकाल तक यह कार्य करके अविस्मरणीय समाज सेवा की।

ज़िला एटा में काली नदी के तट पर बसे नदरिया ग्राम में भाद्र शुक्ल १३, सम्वत् १९३८ विक्रमी (६ सितम्बर सन् १८८१) मंगलवार को एक श्रेष्ठ परिवार में आपका जन्म हुआ। जब आपकी आयु मात्र १० वर्ष की थी तब आपके पिता श्री कुंज बिहारी लाल जी का देहावसान हो जाने के कारण आपकी माता श्रीमती गोविन्दी देवी ने आपका पालन पोषण एवं शिक्षा-दीक्षा, अभावग्रस्त होने के बावजूद, धैर्य एवं स्वाभिमान पूर्वक की।

आपकी शिक्षा सन् १८८७ में नदरिया के एक मौलवी से उर्दू एवं फारसी के अध्ययन से आरम्भ हुई। इसके पश्चात् भाभरा की एक पाठशाला तथा सन् १८९२-९५ की अवधि में एटा की एक तहसील के स्कूल में आपने अध्ययन किया। मिडिल की परीक्षा में आप पूरे प्रान्त में चतुर्थ स्थान पर रहे। मिडिल के बाद आपने अलीगढ़ के एक राजकीय स्कूल से सन् १९०१ में मैट्रिक की परीक्षा पास की। यहाँ आप अपने ताऊजी के पुत्र श्री राधा दामोदर के पास रहे। सन् १८९८ में छात्रावास में आप बेलून के आर्य छात्रों के सम्पर्क में आकर आर्य समाज के अनुयायी बने । आर्य समाज के प्रभाव से ही आपके जीवन में देवत्व का प्रादुर्भाव हुआ। अपने संस्मरण में आपने लिखा है कि आर्यसमाज के सम्पर्क में आकर आप अन्धकार से प्रकाश में आये। दैनिक संन्ध्या एवं हवन तो आपने आरम्भ किया ही, सत्यार्थ प्रकाश जैसी कालजयी पुस्तक आप हमेशा अपने साथ रखते थे।

आर्यसमाज सत्याचरण का पाठ पढ़ाता है। उन दिनों अलीगढ़ के चम्पाबाग में आर्य विद्वानों के प्रवचन हो रहे थे और आप छिपकर वहाँ जाते थे। इससे आपको आत्म ग्लानि हुई। अतः आप राजकीय विद्यालय के मुख्याध्यापक श्री कैसविन के पास सत्संग में जाने की अनुमति लेने हेतु पहुँचे। अनुमति न मिलने पर आपने आर्य समाज के नेताओं को इसकी सूचना दी जिन्होंने आर्य छात्रों हेतु अलीगढ़ में एक शिक्षण संस्था 'वैदिक आश्रम' की स्थापना की। इस संस्था में प्रवेश पाने वाले आप प्रथम छात्र थे। राजकीय विद्यालय में आपको शिक्षा शुल्क की छूट थी एवं छात्रवृत्ति भी मिलती थी। वैदिक आश्रम में प्रवेश लेने से इन सुविधाओं से आप वंचित हो गये। सत्य एवं धर्म के लिए आपका यह प्रथम त्याग था। इस प्रकार सामाजिक कार्यों में सोत्साह सक्रिय जीवन व्यतीत करते हुए आपने अंग्रेज़ी एवं दर्शन शास्त्र में एम.ए. किया।

आपका कर्मक्षेत्र शिक्षा से जुड़ा रहा। सन् १९०४ में आप बिजनौर में राजकीय स्कूल में अध्यापक नियुक्त हुए। इसी काल में आपने तत्कालीन पौराणिक मान्यताओं के विरूद्ध अपनी पत्नी श्रीमती कलादेवी का प्रयाग में यज्ञोपवीत एवं पुत्री आयु, सुदक्षिणा का उपनयन संस्कार भी कराया। उन दिनों प्रयाग में यह किसी महिला व कन्या के यज्ञोपवीत संस्कार की प्रथम घटना थी।

पंडित जी बिजनौर एवं प्रयाग के आर्य समाज से सक्रिय रूप से जुड़े रहे । यहाँ आप आर्य समाज के उत्सवों पर आमंत्रित विद्वानों के भोजनादि की व्यवस्था करते थे। परिवार के लोग भी आपके कार्य में हाथ बँटाते थे। उत्तर काल में आप आर्य समाज चौक, प्रयाग के प्रधान, प्रयाग की आर्य कन्या पाठशाला के प्रबंधक, हिन्दू अनाथालय, मुट्ठीगंज के प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के १९४६ से १९५१ तक मंत्री रहे। महर्षि दयानन्द की उत्तराधिकारिणी, परोपकारिणी सभा ने भी आपको अपनी सभा का सदस्य मनोनीत किया था। हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने आपकी पुस्तक 'आस्तिकवाद' पर अपना सर्वोच्च मंगला प्रसाद पुरस्कार प्रदान किया। पुरस्कार में प्राप्त सम्पूर्ण धनराशि आपने आर्य समाज, प्रयाग को दान दे दी और इससे वहाँ अपनी पत्नी के नाम पर एक सत्संग हाल बनवाया। यहाँ हम यह कहना चाहेंगे कि यह पुस्तक ज्ञानवर्धक, रोचक एवं स्वाध्याय के लिए अत्यन्त उपयोगी है। कुछ समय पूर्व विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली एवं श्री घूड़मल प्रह्लाद कुमार आर्य न्यास, हिण्डोन सिंटी से इस ग्रन्थ का प्रकाशन हुआ है। प्रत्येक आर्य समाज के सदस्य को इस पुस्तक को अवश्य पढ़ना चाहिये, ऐसा हम अनुभव करते हैं।

सन् १९०६-०७ में बिजनौर आर्य समाज के अपने मंत्रित्व काल में आप 'आर्य मुसाफिर' के लिए नियमित लिखते रहे। इन्हीं दिनों आपने संस्कृत भाषा का भी गम्भीर अध्ययन किया। जीवन काल की संध्यावेला में आपने अनुभव किया कि शास्त्रार्थ से प्रतिपक्षी कतराते हैं। अतः आर्य समाज को विपक्षियों के उन स्थानों पर जाकर प्रचार करना चाहिये जहाँ वह कार्य करते हैं। इस योजना को आपने कार्यरूप दिया। सत्य व असत्य के निर्णयार्थ आपने एक बार बाराबंकी में पादरी ज्वालासिंह से गिरिजाघर में जाकर सौहार्दपूर्ण वातावरण में शास्त्रार्थ किया ।

बिजनौर के राजकीय विद्यालय की नौकरी को आपने अपने स्वाभिमान के विरुद्ध अनुभव किया। आपकी धर्मपत्नी ने आपकी चिन्ता को समझकर नौकरी से त्याग पत्र देने की सहमति देकर भविष्य की पारिवारिक जीवन की सभी कठिनाईयों को सहर्ष सहन करने की अपनी इच्छा व्यक्त कर एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया। अतः सन् १९१८ में राजकीय विद्यालय की सेवा से त्यागपत्र देकर आपने डी.ए.वी. स्कूल, प्रयाग के मुख्याध्यापक का कार्य आरम्भ किया जो उन दिनों १०,६०० रुपये घाटे में था। अध्यापकों के वेतन के लिए स्कूल में धन नहीं था। ऐसी स्थिति में स्कूल में कार्य आरम्भ किया और इस समस्या को हल करने के लिए आपने सबसे कम वेतन पाने वाले अध्यापक को पहले और स्वयं सबसे बाद में वेतन लेने की परम्परा डाली। इससे कर्मचारियों में व्याप्त असन्तोष दूर हो गया। ५८ वर्ष की आयु में भी आप पूर्ण स्वस्थ थे और स्कूल के नियमानुसार पद पर कार्य कर सकते थे। उन दिनों हैदराबाद रियासत में हिन्दू जनता पर किये जा रहे अन्याय एवं हिन्दूओं के धार्मिक अधिकारों के उल्लंघन के कार्यों के विरूद्ध अपनी संलग्नता के कारण आपने सेवा से त्याग पत्र दे दिया। इस डी.ए.वी. कॉलेज, प्रयाग के बारे में यह तथ्य महत्वपूर्ण है कि इसकी आधारशिला अथर्ववेद के भाष्यकार वैदिक विद्वान् पं० क्षेमकरण दास त्रिवेदी ने १४ मई १९१६ को रखी थी।

**क्रमशः**

***प्रेषक - श्री हरिदेव रामधनी, आर्य रत्न, मन्त्री आर्य सभा मॉरीशस***

# आर्य समाज का प्रचार कैसे करना संभव है?

*आचार्य विरजानन्द उमा, एम.ए*

आज मनुष्य जाति केवल भौतिकता को लक्ष्य समझ बैठी है, इसी लिए एकतरफा प्रगति हो रही है। वास्तव में अनेक महानुभाव संसार में कुछ न कुछ कर्म करने के लिए आए और अपने सामर्थ्यानुसार कुछ उद्धार कर गए, परंतु किसने मनुष्य को सही राह पर खड़ा किया? यह प्रश्न पूछने से पता चलता है कि वे के सर्वांगीण विकास के माध्यम से मूल उपाय दर्शा कर चले गए। उन्होंने वेद को प्रकाश- स्तंभ और परमात्मा को प्रकाशक माना। बड़े-बड़े दिग्गज विद्वान आए और चले गए, परंतु उसी को गुरु माना गया जिसने वेद का आश्रय लिया।

वस्तुतः आर्य बनना या आर्य बनाना आसान नहीं है, यह नाखून से पहाड़ खोदने जैसा है। सब से पहले 'आर्य' शब्द से हमें परिचित होना है, फिर उसके अर्थ को जानकर, भाव को समझकर, जीवन में उतारना ही श्रेयस्कर है। 'आर्य' शब्द का अर्थ सभी लोग श्रेष्ठ बताते हैं, अर्थ सही है, और उसे सत्यमय आचरण भी कहा जा सकता है। ज्ञान से परिपूर्ण होना भी आर्यत्व का गुण है, प्रासंगिक ज्ञान, व्यावहारिक ज्ञान और परमार्थिक ज्ञान से भरा ही व्यति बंधन से छूटने का प्रयास कर सकता है। जो इस प्रकार प्रयत्नशील रहता है, गतिशील एवं प्राप्त करने के लिए इच्छुक रहता है, स्वाध्याय को जीवन का एक अंग मान लेता है उसको सही अर्थ में 'आर्य' कहा जा सकता है।

वस्तुतः हमारे देश में आर्य समाज का प्रचार करना कठिन नहीं है, मगर समाज के साथ-साथ हमें व्यक्ति की जीवन-पद्धति पर ध्यान रखते हुए उनकी भाषा और संस्कृति पर भी ध्यान देना चाहिए। युग प्रवक्ता स्वामी दयानन्द जी आर्य समाज रुपी बाग को इस प्रकार सजाया था कि कोई भी बाहरी शत्रु इधर आँख उठा कर देख नहीं सकता था, वेद ही उनका अभेद शस्त्र था, जिससे कोई भी उनके सामने टीक नहीं पाता, यहाँ तक कि डर कर उनके साथ मिल जाते थे। हमें भी उसी शस्त्र को धारण करना है।

**'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** का नारा लगाना सुगम है, उस के भाव को बिना समझे कुछ नहीं कर सकते, बल्कि उल्टा काम हो जाएगा। मेरे विचार से आर्य समाज का प्रचार गर्भ से ही करना चाहिए। हाँ, आर्यों के मध्य में तो काम हो जाएगा, अन्य संप्रदायों के मानने वालों को क्या हम यह सिखा सकते हैं?

जवाब 'हाँ' भी हो सकता है, कैसे? एक सुनियोजित कार्यक्रम द्वारा । प्राथमिक स्तर के बच्चों के साथ कार्य शु करना चाहिए! स्कूलीय पाठ्यक्रम द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर वैदिक सिद्धान्त एवं मान्यता आसानी से प्रसारित कर सकते हैं। प्रत्येक आधुनिक उपकरण द्वारा, जैसे मोबाइल फोन, आईपाद ताबलेट, इंटरनेट, फेसबूक आदि के द्वारा, अच्छे प्रकार से काम किया जा सकता है, परंतु इस के लिए त्याग और निस्वार्थ भाव से चाहिए। लगन, तप, श्रद्धा, पवित्र मनोवृति और प्रगति के लिए करेंगे तो हम अवश्य सफल हो जाएँगे।

*आर्य समाज का कार्य पूरा करेंगे ।*
*आर्य समाजी बनाएँगे।*
*अलमिता विस्तारेण*

# गांधी जयंती

*रामावध राम*

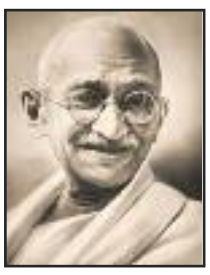

गांधी जयंती २ अक्टूबर को सर्वत्र मनाई गई। देश-विदेश में जहाँ हिंदू लोग बसते हैं। जैसे – भारत, दक्षिण-अफ़्रीका मॉरीशस आदि। अन्य जाति के लोग भी उनके मार्ग के अनुगामी बने हैं। इनमें नेल्सन मानडेला का नाम प्रमुख आता है जो गांधी जी अपना आंदोलन वहीं से आरम्भ किया था। विशेषकर हिन्दुओं की दुर्दशा उनसे देखी नहीं गई। उन लाचारों-बेसहारों के लिए कोई आवाज़ उठाने वाला नहीं था। उन ग़रीबों के लिए कई बार जेल की यात्रा भी करनी पड़ी । वहाँ के अँग्रेज़ शासक वर्ग के लोग बहुत अत्याचारी थे। जो धनवान हिन्दू थे, वे अँग्रेज़ों के पक्षपाती थे।

नेल्सन मानडेला ने भी आवाज़ उठाई गांधी जी के बाद। उन्हें भी जेल में ठूँसा गया। ऐसा ही होता है सच्चाई के मार्ग में चलने वाले के साथ, यह स्वाभाविक है। मानडेला ने एकता का नारा किया की अँग्रेज़ों ने उनकी आवाज़ को दबाने के लिए, उनका जीना हाराम कर दिया।

अमेरिका के राष्ट्रपति बाराक ओबामा ने भी सन्मार्ग को अपनाते चले जा रहे हैं। उनके कई दुश्मन खड़े हो गए हैं । पर सत्य को मानने वाले ही, सच्चा वैदिक सिद्धान्त को मानने वाले होते हैं । वेद यही कहता, सत्य पर जीओ और सत्य पर मरो। स्वामी दयानन्द सरस्वती महाराज, सत्य के लिए घरबार, सब परिवार सब कुछ त्याग दिया। जीओ तो ऐसे जीओ, जैसे सब तुम्हारा है, मरो तो ऐसे मरो जैसे तुम्हारा कुछ भी न था।

मॉरीशस में भी ऐसे त्यागी हुए, जिन्होंने अपना तन, मन, धन, सब निछावर किया। वे थे मॉरीशस के योगी। स्वर्गीय प्रो० वासुदेव विष्णुदयाल जी ने क्या नहीं किया हम हिन्दुओं के लिए पढ़ाया-लिखाया, उस समय जब हमें ओ३म् का नाम लेना वर्जित था। गाँव-गाँव, शहर-शहर में भी हिन्दी पाठशालाएँ खोली और अपने शिष्यों से भी खुलवाई। तभी तो हिन्दी का बोलबाला है। पढ़ो हिन्दू सभी हिन्दी अ, आ, इ, ई, यह ऋषियों की भाषा है। क, ख, ग, घ, ङ, देवताओं की भाषा है।

*एक दिन यहाँ पर हिन्दू का ज़माना होगा, हिन्दू का ज़माना होगा ।*
*हाँथों में झण्डा लेकर जग में, फहराना होगा।*
*यह ओ३म् का झण्डा आता है, सोने वालो जाग चलो ।*
*यह सूर्य वेद का चमका है, और अधतम क्यों धमका है।*

## RISHI DAYANAND INSTITUTE

Dear Respected members,

**New Educational Services at Rishi Dayanand Institute**

We have immense pleasure in sharing the following information with you :-

1. Our DAV Degree College is henceforth known as Rishi Dayanand Institute following letter from the Tertiary Education Commission dated 19th June 2014.

2. Arya Sabha Mauritius is now MQA registered.

3. We have recently signed an MoU with Open University Mauritius for the following BSc Programmes :-

➢ **BSc (Hons) Business Entrepreneurship [OUbs010]**

➢ **BSc (Hons) Business Management with Specialisation in Human Resources / Marketing/Tourism Management/ Financial Services/ Financial Risk Management/ Investment/Taxation/Real Estate-OUbs007**

Rishi Dayanand Institute is now ready to welcome students for two new programmes which will be awarded by Open University Mauritius.

We shall appreciate if you could see into the possibility of sponsoring **two** students from your Samaj to follow any of the two above mentioned programmes.

It can be in the form of collective sponsorship through fund collection or individual support.

This will enhance the charitable mission of Arya Sabha Mauritius.

We are therefore appealing to you to join us in this noble task of educating our vulnerable and needy children so that they become successful citizens of this country.

You may wish to contact us for more information on fees structure and detailed programme.

**H. Ramdhony**
*Secretary*

# प्रकृति की मदद से मिटाइए : मोटापा

*डॉ० विनय सितिजोरी, बी.ए.एम.एस,बी.एन.वाई.एस*

मोटापा अर्थात् शरीर में आवश्यक्ता से अधिक चरबी बनना और जमा होना। मोटापा शरीर की जीवनशक्ति को मंद कर देता है।
उपचार : मोटापे के सफल उपचार के तीन हिस्से हैं – १. भोजन में परिवर्तन, २. पंचतत्व उपचार, ३. योगासन, प्राणायाम तथा ध्यान । संक्षेप में इनपर विचार कर लें ।

**१. भोजन में परिवर्तन**

मोटापे के रोगी को भोजन की मात्रा एकाएक न घटाकर आरंभ में आहार में परिवर्तन से ही संतोष करना चाहिए। उसे घी, तले पदार्थ, सफ़ेद चीनी, मिठाई, लाल मिर्च, खटाई, अचार, भैंस के दूध तथा मैदे से बनी वस्तुओं, बिस्कुट, आलू, चीकू, केला, चाय, कॉफी, बीयर, शराब, तंबाकू का सेवन धीरे-धीरे बंद कर देना चाहिए। मौसमी सब्जियों एवं अनेक सूप, नींबू प्रजाति के फलों (नींबू, चकोतर, संतरा, मुसंबी, आदि), अमरूद, अनार, पपीता, चूसने के आम, तरबूज, खरबूजा एवं अनेक रसों का सेवन बढ़ाना चाहिए।

आहार में दो चीजों का समावेश खास तौर पर किया जाए –
(क) गाय के दूध की छाछ (जो खट्टी न हो) बिना नमक या मीठा मिलाइए ; तथा
(ख) सलाद,भैंस का दूध एकदम बंद कर दें ।

**२. पंच तत्व-उपचार :** मिट्टी, पानी, हवा, धूप और आकाश – ये पंचतत्व हैं । यह अनुभवी प्राकृतिक चिकित्सक की देखरेख में ही लिया जाए। इसकी सामान्य विधि यह है :
(क) सुबह शौचादि से निवृत्त होकर गुनगुने पानी में एक नींबू तथा एक-दो चमच शहद मिलाकर पीना ।
(ख) उसके बाद किसी साफ़-सुथरी जगह से खोदकर निकाली हुई, स्वच्छ मिट्टी को भीगोकर उसकी पट्टी पेडू पर आधा घंटा ऊनी कपड़े से ढककर रखना। इससे पहले गरम पानी की बोतल या इन्फ्रारेड लैंप से पाँच मिनट पेडू की सिकाई कर लें। पट्टी हटाने के बाद नींबू रस का १०-२० बूंदें डालकर डेढ़-दो लीटर गुनगुने पानी का एनिमा दायीं करवट लेटकर १०-११ नंबर कैथीटर से लें।

सप्ताह में तीन दिन ठंडे पानी का कटिस्नान, एक दिन भापस्नान, एक दिन गुनगुने पानी में पूर्ण-टब स्नान, एक दिन खूब ठंडे पानी का मेहनस्नान और एक दिन गीले कपड़े से सिर ढककर धूपस्नान के तुरंत बाद ठंडे पानी से स्नान तथा पूर्ण-टब स्नान के बाद, ठंडे पानी के तौलिए से स्पंज करना न भूलें।

मौसम चाहे सरदी का हो या गरमी का प्रायः सब कपड़े उतारकर छत पर अथवा घर के बगीचे या किसी पार्क में ताजी हवा और आकाश का सेवन प्रतिदिन आधा घंटा किया जाए । इसके लिए सर्वोत्तम समय भोर से पहले ४.०० बजे के आस-पास का है ।

**३. योगासन, प्राणायाम, ध्यान :**

प्रतिदिन ३० मिनट तक निम्नलिखित योगासन करें – सर्वोत्तानासन, नौकासन, उत्तानपादासन, पवनमुक्तासन, शलभासन, धनुरासन, वज्रासन, पद्मासन, पूर्वोत्तनासन, पश्चिमोत्तनासन, ताड़ासन, जानुशिरासन तथा कंधे, गरदन एवं पुतलियाँ घुमाने का आसन।

प्राणायाम की दृष्टि से अग्निसार, उज्जायी और नाड़ीशोधन पर बल दें । इन्हें विशेषज्ञ से सीखें। जो ध्यान के अभ्यासी हैं वे प्राण और अंतर्दृष्टि की आज्ञाचक्र में स्थापित करना गुरु से सीखकर निष्क्रिय ध्यान की मुद्रा में जाएँ। चूंकि मोटापे का अर्थ शरीर में पृथ्वी तत्व की अधिकता है, इसलिए इसका ध्यान करें कि आपका पृथ्वीतत्व क्षीण हो, आप पृथ्वी पर भार न बनें।

# Achieving long-lasting peace

**Om Shantih, shantih, shantih||**

*(Taitiriya Aranyaka 9.1).*

In the RigVedādi Bhāshya Bhumikā Maharishi Dayānand Saraswati portrays this verse as an unequivocal prayer for universal peace, an appeal to God to shower upon us His grace: compassion and peace by freeing us from the three types of miseries : *(1) Adhyātmik* – distress arising out of sickness that affects our body; *(2) Adhibhautik* – distress arising out of nuisance from other living beings; and *(3) Adhidaivik* – distress arising out of inner chaos, malfunctioning of our sense organs, an impure and wavering mind and body. This verse is further integrated at the end of the *Shanti Pātha* as a conclusion to our prayers.

**Athah trividha-dukha-atyanta-nivirtti-atyanta-purushārthah ||**

*Sankhya Darshan Sutra 1.1*

Maharishi Kapil here highlights on the need for the entire human race to put up the greatest efforts for a complete relief from the three types of sorrow. The end is of all sufferings is *moksha*, i.e. liberation from the cycle of birth and death in the course of self and God-realisation.

A scrutiny of the causes of distress also brings to light the efficient and effective ways to get relief from distress and take appropriate actions. The categorisation by the *rishis* (sages) is a scientific one which covers all types of afflictions affecting mankind.

So long as a person feels happy about his individual position in society he believes that peace is none-of-his-individual-concern but a collective issue and casts it aside as "agenda of conferences" in times of conflict. However, long-lasting peace is attainable only when the individual, as the smallest unit of the social fabric, enjoys peace of mind along with coherence in speech and actions. *The slightest discord between thoughts, speech and actions is bound to yield conflicts... thus goodbye to peace.*

Peace is related to the mental and emotional condition of the individual. The ingredients of long-lasting peace are serenity, self-control, self-confidence, tranquillity in times of rough and tough, and the likes. Peace is definitely an inner ornament that shines in the hearts of selfless human beings. Anyone who loses this invaluable ornament falls prey to anxiety, agitation, turmoil and chaos.

*Nothing comes for free in this universe!* The prevailing conflicts across families, social groups, nations and world is the sum total of the fruits of the past and present actions of each individual. And these actions also impact on the future. Man needs to upgrade himself to the status of human and subsequently to spiritual being. Auto-discipline is an essential building block for a harmonious personality. It liberates man from the insatiable hunger of *sakāma karma*, i.e. deeds which pays off instant rewards: fame, material gains at the detriment of the community, etc.

God created this universe from *prakriti* which has the three prime attributes *(Trigunas – sattva, raja and tama)*. A *satvic* milieu yields to an equitable and bright state of affairs; a *rājsic* one - an unstable and insecure condition; and a tāmasic one – a shady and dull setting.

Given that these *gunas*, in various mixes, turn on the workings of the universe, there exists no such object or place constituted only by either *sattva* or *raja* or *tama*. Hence, the *satvic* milieu is bound to be, at one time or the other, subdued to the influence of *raja* and *tama*. Our rishis rightly affirmed that each unit of happiness derived from worldly things is also dosed with two units of gloom (1 *raja* & 1 *tama*). Immaculate bliss is experienced only in moksha. *Yama* and *Niyama* constitute the starting block in the race to Self and God-realisation.

Evil company leaves evil imprints *(samskāras)*, ruins the human quality, devalues life and reduces man as a man only in appearance where he fails to be human in thoughts, words and deeds. Such a circle Man needs to upgrade himself to the status of human and subsequently to spiritual being like the worm which lives within a fruit and eats it from the inside.

Man should strive to (i) give up closeness with evil people; (ii) develop friendship with noble people; (iii) do deeds that trigger good feelings and bestow good sleep at night; and (iv) differentiate between the eternal (God) and the ephemeral where everything born or created is fated to die or decay."

Young people should be empowered to nurture humanitarian feelings and qualities, participate in activities that enhance the physical, moral / spiritual and social standards. *The basic lessons are learnt at home and consolidated at school.* Regrettably, both parents and teachers are passing the ball! Children fail to grasp the values that would have empowered them with wisdom to tackle obstacles in life. Parents and teachers need to assume their duty and adopt the carrot and stick policy, i.e. reward or reprimand as per merits. Children would thus grow up to lead a life of exemplary excellence.

Humans shine in their full splendour once they eradicate the internal enemies: (i) ignorance *(avidyā)*, (ii) confound the body with the soul despite the fact that they are two separate things *(asmitā)*, (iii) obsession *(rāga)*, (iv) hatred *(dwesha)*, and (iv) the fake notion that 'I will not die!' in spite of the fact that one sees animals and people dying daily *(abhinivesha)*.

***If a plant bends while it is a sapling, it can never be straightened when it becomes a tree!*** An unsettled debt grows by leaps and bounds and assumes a greater-than-the-original amount. The traces of the disease left in a patient may relapse and prove disastrous to him. The remnants of a fire may blaze into a calamity. Likewise *avidyā* needs to be wiped out as it is the breeding ground for *asmitā, rāga, dwesha* and *abhinivesha*. The waves of *kāma* (lust), *krodha* (anger), *lobha* (greed) and *moha* (infatuation) need be nipped in the bud. That is why our rishis have qualified *childhood and youth as the most appropriate periods to cultivate 'self-control and be in command of the mind.'*

External enemies are easier to quash as compared to internal enemies. Hardly noticeable and difficult to flush out, *Avidyā, asmitā, rāga, dwesha, abhinivesha, kāma, krodha, lobha, moha,* etc... (the internal enemies) keep resurfacing in the same way as oil comes back to the surface however deep it is dumped under water. Only the complete extinction of those invisible internal enemies brings ongoing peace to man.

Peace arises in the human heart when man is unaffected by the three attributes prakriti. We need to put up earnest efforts to develop *viveka* (knowledge that empowers a person to sift truth from untruth), *vairāgya* (awareness of the real goals of human life) *upekshā* (indifference) and *anāsakti* (de-addiction from physical gratification).

Peace is also equated with 'purity of the mind'. True education is the training of the mind. *Life is of no use in the absence of 'restraint of the mind' in spite of one's high intelligence and status.* An undisciplined lifestyle looks a lot like: "worship without the purity of the mind... spiritual practice without the purity of the self... storing milk without the purity of the vessel ... bound to end in a rot!!!"

Nobody can rest peacefully in a room where venomous worms crawl. There will be no peace for man as long as the worms of *avidyā*, *asmitā*, *rāga*, *dwesha*, *abhinivesha*, *kāma*, *krodha*, *lobha* and *moha* breed in *chitta* (memory) and *mana* (seat of feelings). There is a dire need for each and every individual to root out these worms to progress towards peace.

Thoughts determine our conduct. It only when noble thoughts come to us from all sides (*ā no bhadre kratavo yantu vishvato*) that we would cultivate noble thoughts. When a piece of charcoal and a burning ember are brought into contact, the charcoal gradually loses its blackness and glows with increasing intensity as the heat and the fire of the ember enters into it. The charcoal in turn becomes an ember to the extent it allows itself to be consumed by fire.

This is the miracle of transformation produced by *satsangh* (the company of people with noble thoughts, speech and deeds). We need to revisit history and take cognisance of the transformation of Amichand, Gurudutt Vidyārthi, Swami Shraddhānand, and numerous stalwarts who emerged at the budding stage of the Arya Samāj movement just after the demise of its founder Maharishi Swami Dayanand Saraswati. These persons are dearly remembered as stalwarts because they practiced the "walk-the-talk" type of living. Their thoughts, speech and deeds were in absolute harmony. They were extremely committed to the cause they stood for. Their towering personality stood out like the baobab tree among bushes. They would stand as odds if they could have been migrated into the current times. They were torchbearers and militants of long-lasting peace who carried the message of

***Om Shantih, shantih, shantih ||***

*The company of a burning ember transforms...*
*A black piece of charcoal into another ember.*
*Being 'Near' to noble company is not enough...*
*More important is to be 'Dear' to the root of such nobility*
*And adopt the noble traits, deeds and intrinsic virtues.*
*We need to live the ideals of peace in thoughts, speech and deeds.*
*Serve as role models,*
*Be sincere advocates of peace... ahead of our time!*

**BramhaDeva Mukundlall**
**Darshan Yog MahāVidyālaya, Gujarat, India**
**Rojad, Gujarat, India**

# Shrawani Upakarma celebrated by the Arya Samaj Port Louis

***Pt. Mohurlall Roopan***

The Shrawani Upakarma Festival is celebrated during the month of Shrawan month in India. According to the Gregorian calendar this year the shrawan month starts from 13 July.

In India it is the Shrawan month the monsoon season of heavy rainfall. The Atharva Veda states that **"christmasté bhoomé varshāny shrādhé mantaha shishiro vasantaha"** *Chapter 2-1-36.*

In India there are six seasons per year namely – (i) Grishma (summer), (ii) Varshani / Shrawan bhadon (raining), (iii) Vassant, (iv) Shishir, (v) Sharad, (vi) Hemant. These seasons can neither be compared to the four seasons of Europe nor to the two seasons of our country.

The Purohit mandal under the aegis of the Arya Sabha Mauritius began this celebration with a bahukundiya yajna at the seat of the Arya Sabha on the 13th July 2014.

This activity was followed by a yajna at Port Louis Arya Samaj of Chateau D'eau street , Tranquebar. After that other members of the samaj held yaj and satsangh at their respective residences.

This year all branches of Arya Samaj of Port Louis went a little further by organizing yajna in all the five Ashrams run by the Arya Sabha Mauritius and offered donation in cash and kind.

To accomplish this noble action the members of the Port Louis Arya Zila Parishad proceeded in the following way:- First they went to Gayasingh Ashram on the 26th August 2014 and on the 1st of August they proceeded to Trochetia Ashram at Pointe aux Sables. Yajna and Bhajans were performed . This was followed by distribution of snacks to all the inmates.

On the 7th August members went to the Balgobin Ashram at St. Paul. After the yajna Mr S. Peerthum, the Vice-President of the Arya Sabha addressed the gathering. He congratulated and thanked all the members of Port Louis Arya Samaj for their benevolent deed. In the end a meal was served to both the inmates and to all those who attended the yajna.

On the 14th August all the members of Port Louis Arya Zila Parishad went by bus to Belle Mare Chiranjiv Bhardwaj Ashram. There, yajna was performed. It was followed by bhajans and a talk on Shrawani Upakarma. Then the members offered donation to the Ashram and served meal to all the inmates and other people present.

The fifth visit of the Parishad members was at Phoolbasseea Ashram Chemin Grenier. Our bus reached there at 11.00 a.m. That was lunch time for the inmates. Anyhow a little Agnihotra was performed followed by vote of thanks by Acharya Satish Beetullah , Mr Ramjee, the President and Mr Jagdish Bheekharee Secretary of the Ashram.

Members of Port Louis Arya Zila Parishad were greatly satisfied and felt a sense of pride with their generous and philanthrophic action — this following motto: they have in mind

*"Service to mankind is service to God"*

# पं० धर्मवीर घूरा की याद में लेखक संघ द्वारा यज्ञ

पं० धर्मवीर घूरा, शास्त्री जी हिन्दी लेखक के संस्थापकों में से थे और लम्बे समय तक संघ के प्रधान रहे। उनका देहान्त १७ सितम्बर २००९ में हुआ था। अगस्त २०१४ को संघ की ओर से डा० विदुर दिलचन्द, डा० लालदेव अंचराज, श्री विष्णुदत्त मधु, श्री देवदत्त ब्रिजमोहन तथा डा० इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ हम श्रीमती सावित्री घूरा जी के स्थान पर उनका हालचाल पूछने गए थे। पं० घूरा जी की पुत्री प्रतिमा घूरा ने कहा कि पिता जी के गुजरे ५ साल हो गए है। उनकी इच्छा है कि संघ द्वारा उनकी याद में एक यज्ञ उनके स्थान पर किया जाए।

उसी उपलक्ष्य में पं० घूरा जी की पत्नी श्रीमती घूरा जी के स्थान पर शनिवार १३ सितम्बर २०१४ को एक यज्ञ का अनुष्ठान हुआ। पं० सुनुकसिंह, पं० मुखलाल लोकमान, पं० नन्देव कालका तथा पंडिता चम्पावती बम्मा द्वारा यज्ञ हुआ।

लेखक संघ के प्रधान डा० लालदेव अंचराज, मान्य प्रधान डा० इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ, संघ की महामंत्री श्रीमती बिदवन्ती अजोध्या तिलक तथा पं० मुखलाल लोकमान द्वारा पं० घूरा जी की हिन्दी सेवा तथा उनके त्यागभाव की चर्चा हुई। श्रीमती सीता रामयाद श्री देवदत्त ब्रिजमोहन, श्रीमान और श्रीमती बलवन्त सिंह नौबतसिंह आदि महानुभावों में अपनी उपस्थिति से अनुगृहीत किया था।

यज्ञ के बाद सभी को भोजन से सत्कार किया गया। संघ की ओर से श्रीमती घूरा और प्रतिमा घूरा को धन्यवाद दिया गया।

**ARYODAYE**
**Arya Sabha Mauritius**
*1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,*
*Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,*
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
**प्रधान सम्पादक :** डॉ० उदय नारायण गंगू,
*पी.एच.डी., ओ.एस.के., आर्य रत्न*
**सह सम्पादक :** श्री सत्यदेव प्रीतम,
*बी.ए.,ओ.एस.के,सी.एस.के.,आर्य रत्न*
**सम्पादक मण्डल :**
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
*Printer : BAHADOOR PRINTING LTD.*
*Ave. St. Vincent de Paul, Les Pailles,*
*Tel : 208-1317, Fax : 212-9038*

## YOU HAVE EVERYTHING INSIDE YOU

*Know your gifts*
*Know your blessings*
*Know your being*
*Know your existence*
*Know your potentialities*
*Know your capabilities*
*Know your virtues*
*Know your values*
*Know your thirst*
*Know your quest*
*Know your stillness*
*Know your peace*
*Know your strength*
*Know your weakness*
*Know your breath*
*Know your presence*
*Know your role*
*Know your importance*
*Know your guide*
*Know your goal*
*Know your success*
*Know your failure*
*Know your love*
*Know your joy*
*Know your clarity*
*Know your fulfilment*
*Live, feel and experience these*
*This is all that you need to do here*
*Live with peace*
*Die without fear.*

***Dipnarain Beegun***